

# धार्मिक समन्वय और विश्वशान्ति

डॉ. एम. डी. थॉमस

**एक से अनेक होना, अनेक से एक होना** — यह जीवन की प्रक्रिया है। अनेकता सिफ़ तादाद का खेल नहीं है। उसमें विविधता का गुण छिपा हुआ है। विविध होने का मतलब है — कुछ अलग पहचान रखना। जितने अलग हैं, ठीक उतने ही प्रकार भी हैं। हर एक की अपनी-अपनी खासियत है, अपनी-अपनी पहचान भी। लेकिन यह पहचान पूरी तरह से स्वतन्त्र नहीं होती है। कटी हुई पहचान फटी हुई होती है। अलग होकर भी एक है। जैसे एक होकर भी अलग है! जीवन की इस बर्नियादी हकीकत की नींव पर ज़िन्दगी की इमारत खड़ी होती है। उस रहस्य का अहसास लिए बिना ज़िन्दगी को समझना नाममकिन है।

**विविधता और एकता** - देखने और समझने के दो तरीके हैं। विज्ञान की दृष्टि से गौर किया जाय तो भिन्न दिखायी देगी। कला की दृष्टि से नज़र डाला जाय तो समरसता सामने आयेगी। करीब से देखिए, लगेगा कि अलग है। दूर से देखिए, एक निगाह में देखिए, तो एकता नज़र आयेगी। शरीर के भाव से सब कुछ भिन्न-भिन्न है, आत्मा के भाव से महसूस होगा कि एक है। बस, नज़रिया का फर्क है। दोनों नज़रिये एक सिक्के के दो पहलू के समान आपस में जुड़े हुए हैं। दोनों ऐसे हैं, मानो एक रस्सी के दो सिरे हों। विविधता और एकता दोनों चाहिए। दोनों के मल-जोल से ज़िन्दगी बनती है।

**विविधता में एकता और एकता में विविधता** — यह रचयिता का करिश्मा है। प्राण की परिकल्पना इसी में निहित है। सृष्टि के सभी तत्व इसी तन्त्र के ताने-बाने से बने हुए हैं। यह रचना की खूबी है। संसार का कोई भी पहलू इस मन्त्र से नहीं बच सकता, चाहे वह वनस्पति हो, या जीव-जन्तु या इन्सान। इन्सानी समाज की खास गरिमा इस उदात्त भाव में पायी जाती है। भारतीय समाज की अर्हामयत खास तौर पर इसी अहसास पर टिकी हुई है।

भारत के राष्ट्रीय नारे के रूप में और उसकी राष्ट्रीय पहचान के रूप में विविधता और एकता का आपसी रिश्ता कुछ अनोखा ही है। भारत में जितनी बोलियाँ और भाषाएँ हैं, उतनी दुनिया के किसी भी देश में नहीं है। उसके साहित्य की भिन्न-भिन्न धाराएँ हैं। कला, संगीत, नृत्य आदि की शास्त्रीय तथा लोकविधाएँ भाँति-भाँति की हैं। खाने और पोने का अपना-अपना अंदाज़ है, अपना-अपना स्वाद। वेशभूषा के असंख्य तरीके हैं। जनता की अनेक जातियाँ और जनजातियाँ हैं। ज़मीन और जलवायु में जगह-जगह बहद फर्क पाया जाता है। विचारधाराओं की कोई गिनती नहीं है। आस्थाओं की अपनी-अपनी भावना है। विश्वासों का अपना-अपना तक है। धार्मिक अनुष्ठानों की भिन्नताएँ कल्पना के परे की बात है। धर्म की अपनी-अपनी परिभाषा है। मज़हब अनेक हैं। नीतिशास्त्र, जीवन मूल्य और व्यवहार के कई आयाम हैं। संस्कृति की अनगिनत धाराएँ हैं। ऐसे में कौन कह सकता है — यह सही है और वह गलत है। इस नज़र से देखा जाय, तो कहना चाहिए, सभी में कुछ सही है और कुछ गलत भी। हर एक की अपनी-अपनी अर्हामयत है। भारत जैसे विशाल देश को इन सबों की सख्त जरूरत है। सब मिलकर, अर्थात् विविधताओं की एकता में, भारतीय संस्कृति बनती है। मतलब यह है, समन्वय-भावना में इन्सानी संस्कृति की असली झलक मिलती है।

**समन्वय-भावना की सबसे अच्छी मिसाल संगीत** - की दुनिया में पायी जाती है। स्वर, ताल और लय के मिलन से संगीत बनता है। पूरे संगीत के लिए गाने, बजाने और नाचने का मल-जोल चाहिए। अलग-अलग साज, गायक आदि एक आधार स्वर पर आपस में मिले, एक ताल में बन्ध जायें- संगीत का यही बर्नियादी मन्त्र है। ताल-मल में संगीत होता है और वह सुनने वाले के दिल को झकृत कर देगा, छू लेगा और उसे एक अलौकिक दुनिया में पहुँचायेगा।

**समन्वय-भावना की सबसे प्रेरणादायक मिसाल- का बाइबल में उल्लेख है—** ‘एक शरीर, अनेक अंग’ (पवित्र बाइबल, नया विधान, कुरिंथी 1:12-28, प. 265-66)। अलग-अलग और बहुत से अंग होने पर भी शरीर एक होता है। यदि सबके सब

एक ही अंग होते, तो शरीर कहाँ होता? वास्तव में खुदा ने अपने इच्छानुसार शरीर में एक-एक अंग को अपनी-अपनी जगह रचा। सिर पर से नहीं कह सकता, 'मझे तुम्हारी जरूरत नहीं है।' आँख हाथ से नहीं कह सकती, 'मझे तुम्हारी जरूरत नहीं।' शरीर के जिन अंगों को कम आदरणीय समझते हैं, उनका अधिक आदर करते हैं। जो अंग दुर्बल समझे जाते हैं, वे अधिक आवश्यक हैं। यदि एक अंग को पोड़ा होती है तो उसके साथ सभी अंगों को पोड़ा होती है। यदि एक अंग का सम्मान किया जाता है, तो उसके साथ सभी अंग आनन्द मनाते हैं। समाज की विभिन्न इकाइयों के समन्वय के लिए, धर्मिक समन्वय के लिए, इससे ठोस और अच्छा प्रमाण कहाँ मिलता !

**इन्सानी समाज में, समची प्रकृति में भी, ताल-मेल हो,** आपसी रिश्ता हो। असली ज़िन्दगी की शुरुआत वहीं होती है। एक दूसरे के बोच सद्भाव हो समभाव हो, सम्मान हो, सम्बन्ध हो, सहयोग हो, और समन्वय हो। यही है इन्सानी ज़िन्दगी को असली परिभाषा। इन्सानी समाज में एक परिवार होने का अहसास हो, एक समुदाय होने की चेतना हो — ऐसी समन्वय-भावना में ही इन्सानियत की निखार आयेगी।

**भारत देश अपनी आध्यात्मिक विरासत के लिए मशहूर है।** नमक यदि फीका पड़ जाय तो वह किसी काम का नहीं रह जाता। वह बाहर फेंका जाता और लोगों के परों तले रौंदा जाता है ( पवित्र बाइबल, नया विधान, सन्त मत्ती 5.3, प.6)। वर्तमान समाज में धर्म बड़ी मात्रा में फीकी हो गयी है। धर्म और अधर्म का फासला करीब-करीब नहीं रह गया है। मजहबी खुदगर्जी और दूसरे पर शासन करने की होड़ दोनों मिलकर भारतीय समाज को बरबादी के कगार पर पहुँचा रहे हैं। साम्प्रदायिक तनाव और हत्या आम बात हो गयी है। अतीत की कितनी गारिमा, लेकिन वर्तमान की कितनी गिरी हुई हालत! कितना खूबसूरत देश, लेकिन, कितना बदनाम! कोई किसी और धर्म-समुदाय का सदस्य है और आस्था की किसी और धारा पर यकीन करता है, इस कारण उसे मारा जाता, तकलीफ़ पहुँचाया जाता या किनारे कर दिया जाता है! अधर्म की इससे बड़ी सबूत क्या है? धर्म के नाम पर पाखण्ड के लिए इससे बड़ी गवाही क्या चाहिए? आध्यात्मिकता की इससे ज्यादा घुटन क्या है? दुनिया के स्तर पर भी दूसरे पर सत्ता जमाने की धुन सवार है, दूसरे को बचकर मनाफ़ा एंठने का दौर चल रहा है। लग रहा है, गुण्डों का राज है। स्वाथ और फिरकापरस्ती का बोल-बाला है। आम इन्सान को तड़पना पड़ रहा है। इन्सानियत किस हद तक बदहाल हो गयी है इसका बयान करना भी मुनासिब नहीं है। जो नेक इन्सान इसके बारे में सोचता है और इस हालत को सुधारने के लिए कुछ करना चाहता है, उसे बड़ो तकलीफ़ होती है, बचैनी होती है।

धार्मिक समन्वय से ही विश्व समाज में, खास तौर पर भारतीय समाज में, अमन और शान्ति कायम हो सकती है। यह बहद जरूरी है कि धमालु जन अन्धविश्वास में बह न जाये, रूढ़िवादी और कट्टर न बने, कर्मकाण्ड से उपर उठकर इन्सानियत के लायक गुणों को हासिल करें। वे मानवीय मूल्यों पर अमल करते हुए धमाचार करें। वे अपने भीतर यह चेतना जगाये कि सभी धर्म-परम्पराएँ भाषाएँ, विचारधाराएँ, संस्कृतियाँ आदि एक ही खुदा की देन है। ये सब किसी भी खास समुदाय की बपोती न होकर मानव समाज की साम्मलित विरासत है। अपने आप में वे सब अधूरे और सीमित हैं। सबकी अपनी-अपनी खूबियाँ जरूर हैं, लेकिन खमियाँ भी। सब कोई एक इसरे के पूरक हैं। सब को एक दूसरे की जरूरत है। सभी धर्म-परम्पराएँ एक दूसरे के लिए आइने के समान हैं। एक दूसरे की मौजूदगी में वे अपनी-अपनी कामियों को पहचानेंगी, उनसे उपर उठेंगी और अपनी खूबियों से दूसरे को समृद्ध करेंगी। इस प्रकार वे सब इन्सानी समाज को बहतर बनाने में काम आ सकती है।

**धार्मिक समन्वय के लिए धर्म-नेताओं की पहल-** निहायत जरूरी है। मजहब अपनी-अपनी अहमियत को बनाये रखते हुए दूसरे मजहब से रिश्ता जोड़े हुए रहे। अपनी बनायी हुई चहारदीवारियों से उपर उठकर दूसरे की ओर हाथ बढ़ाना वक्त की जरूरत है। दूसरी धर्म-परम्परा में, दूसरे धमालु व्यक्ति को, एक ही मूल से आने वाले और एक ही गन्तव्य की ओर जाने वाले मसाफिर के रूप में पहचानकर उसके साथ मिलकर चलना चाहिए। उसके कन्धे से कन्धा लगाकर, कदम में कदम मिलाकर, ज़िन्दगी के सफ़र को तय करने में जीने की कला निहित है। दूसरे की रहनुसाइ करन के बजाय उससे सीखने और प्रेरणा लेने की राह चलना चाहिए। खुद जीये और दूसरों को जीने दें — यह ज़िन्दगी का आम नियम है। साथ ही, दूसरों की जीने की मदद

करनी चाहिए। इन्सानियत का तकाजा यह है। हरेक को दूसरों के प्रति, सम्ची ज़िन्दगी के प्रति, सकारात्मक मानसिकता को धारण किये हुए रहना चाहिए। मानवीय समाज को अधिक जीने लायक बनाने के लिए, बहतर समाज की रचना के लिए, लिये गये संकल्प पर इमानदारी से अमल करते हुए खुदा की दी हुई अपनी-अपनी ज़िन्दगी को जिया जाना चाहिए। यही असली धर्म है। धर्म-परम्पराओं और आस्थाओं के आपसी ताल-मल में धर्म की साथकता निहित है। धार्मिक समन्वय में ही इन्सानी समाज में, चाहे वह भारत में हो या सारे विश्व में, शांति हासिल होगी।

**महात्मा कबोर ने धार्मिक समन्वय द्वारा विश्व शान्ति-** को हकीकत बनाने के लिए एक बहुत ही कारगर नुस्खा पेश किया है। बहता पानी निर्मला, बन्दा गन्दा होय। साधू जन रमता भला, दाग न लागे कोय।। हर धर्म-परम्परा, हर आस्था, हर भाषा, हर संस्कृति, हर इन्सान, बहते पानी के समान दूसरे की ओर बहते रहे, स्वच्छ और शान्त भाव से एक साथ खुदारूपो सागर की ओर साथ-साथ बहते रहे। सरिताएँ मिलकर नदी बन जायें और अपनी मंजिल का सफ़र तय करें। यों कहा जाय, चलते रहें चलते रहें, इसी का काम ज़िन्दगी। मिलके चलें साथ चलें, इसी में ज़िन्दादिली।

---

**डॉ. एम. डी. थॉमस**

**संस्थापक निदेशक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ हार्मनि एण्ड पीस स्टडीज़, नयी दिल्ली**

प्रथम मंजिल, ए 128, सेक्टर 19, सेक्टर 19, द्वारका, नयी दिल्ली 110075

दूरभाष: 09810535378 (p), 08847925378 (p), 011-45575378 (o)

ईमेल : mdthomas53@gmail.com (p), ihps2014@gmail.com (o)

वेबसाइट: www.mdthomas.in (p), www.ihpsindia.org (o)

Twitter: <https://twitter.com/mdthomas53>

Facebook: <https://www.facebook.com/mdthomas53>

Academia.edu: <https://independent.academia.edu/MDTHOMAS>